1. उस व्यक्ति, वस्तु अथवा क्रिया के सामान्य स्थिति में लोग की कुशलता विशेष किसी गुण (चर) का मापन होता है।

2. मूल्यांकन परिणाम के आधार पर सुझाव देने की क्षमता

3. दिए गए सुझावों के परिणामों को परखने की कुशलता।

4. सुझाव देने में निरन्तरता बनाए रखने की क्षमता।

5. मापन परिणामों की व्याख्या करने के मानदण्ड एवं विधियों का ज्ञान एवं उनके प्रयोग कुशलता।

6. मापन उपकरणों एवं विधियों का ज्ञान, उपयुक्ततम मापन विधि के चयन एवं उसके प्रयोग कुशलता।

7.

मूल्यांकन के चरण

1- उद्देश्यों का निर्धारण एवं परिभाषीकरण। (Identifying and defining Objective)

बालक की सामाजिक स्थिति, विषय वस्तु (Contents) की प्रकृति तथा शैक्षिक स्तर को ध्यान में रखकर उद्देश्य को निर्धारित करना चाहिए। व्यवहार परिवर्तन के रूप में उद्देश्य को सफल रूप से तभी निर्धारित किया जा सकता है जब उपर्युक्त तथ्यों को भली प्रकार समझ लिया जाए। तब मूल्यांकनकर्ता को यह स्पष्ट रूप में ज्ञान होना चाहिए कि व्यवहार परिवर्तन किस रूप में और किस सीमा तक लाना है। इससे यह जानने में सरलता होगी कि व्यवहार में वांछित परिवर्तन आया है या नहीं। अतः उद्देश्यों के भली प्रकार पहचान लेने और निर्धारित कर लेने पर ही मूल्यांकन की ओर अग्रसर होना चाहिए। उद्देश्यों को परिभाषित करने में विषय वस्तु और व्यवहार परिवर्तन दोनों को ही समान रूप से महत्वपूर्ण मानना आवश्यक है।

2. अधिगम अनुभव की योजना बनाना

(Planning the learning experiences)

एक बार उद्देश्यों को पहचान लेने और उनका निर्धारित कर लेने के पश्चात अधिगम अनुभव पर ध्यान देना चाहिए। अधिगम अनुभव से तात्पर्य एक परिस्थिति का निर्माण करना है जिसमें बालक क्रिया कर सके अर्थात वह उद्देश्यों के अनुरूप प्रतिक्रिया व्यक्त कर सके।

एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए अनेक अनुभवों की योजना तैयार करनी पड़ती है। योजना निर्माण के समय बालक की आयु, लिंग, पारिवारिक सामाजिक पृष्ठभूमि आदि प्रासंगिक चीजों का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। इन्हीं के आधार पर शिक्षण विधि साधन व माध्यम की व्यवस्था की जानी चाहिए।

(3) विभिन्न उपकरणों के माध्यमों से साक्षियाँ प्रदान करना।

"Providing evidance through various tools of evaluation"

उद्देश्य एवं अधिगम अनुभव की योजना तैयार हो जाने पर मूल्यांकनकर्ता साक्षियाँ एकत्रित करता है। इन साक्षियों के आधार पर (data evidance) व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन करना चाहिए।

(4) व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र

(Area of Chance in Behaviour)

बालक में जीवन में आने वाले व्यवहार परिवर्तन मूल्यांकन के फलस्वरूप ही होते हैं। मूल्यांकन इन व्यवहार परिवर्तनों के लिए एक माध्यम का कार्य करता है। व्यवहार परिवर्तन को तीन भागों में बाँटा जाता है —

1. ज्ञानात्मक पक्ष। Congnitive aspect
2. भावात्मक पक्ष। Affective aspect
3. क्रियात्मक पक्ष। (Creative aspect)

(1) ज्ञानात्मक पक्ष (Cognitive aspect)

यह पक्ष ज्ञान के उद्देश्य पर महत्व देता है। जो ज्ञानात्मक पक्ष की खोज की थी। निम्न प्रकार के ज्ञान को इस पक्ष मे रखा जाता है। — B. S. Bloom

1. विशिष्ट तथ्यों का ज्ञान
2. विशिष्ट तथ्यों को प्राप्त करने की विधियों का ज्ञान
3. मान्यताओं एवं परम्पराओं का ज्ञान
4. मापदण्डों का ज्ञान
5. सिद्धान्तो और सामान्यीकरण का ज्ञान
6. घटनाओं का ज्ञान
7. विधियों और प्रणालियों का ज्ञान।

इस पक्ष के भी ह: (6) स्तर होते है —

1. प्रत्यास्मरण } स्मृति है / ज्ञान
2. अभि: ज्ञान
3. बोध
4. प्रयोग
5. विश्लेषण
6. संश्लेषण
मूल्यांकन

भावात्मक पक्ष (Affective aspect)

1. ग्रहण करना — Receiving
2. प्रतिक्रिया करना — (Reaction)
3. अनुमूल्यन
4. विचारणा
5. व्यवस्थापन
6. चारित्रीकरण

क्रियात्मक पक्ष (Creative aspect)

यह पक्ष मुख्यतः मांसपेशियों एवं आंगिक गतियों की आवश्यकता से सम्बन्धित होता है। इसे शिक्षण प्रक्रिया की दृष्टि से 6 स्तरों में बांटा है। —

1. उत्तेजना
2. क्रियान्वन
3. नियन्त्रण
4. स्वभावीकरण
5. समायोजना
6. कौशल

निष्कर्ष: व्यवहार के इन तीनों पक्षों में परस्पर समन्वय रहता है। बालक के व्यवहार का मूल्यांकन इन तीनों पक्षों के समन्वित रूप में या अलग-2 किया जाता है।

Scanned with CamScanner

(रचनावादी उपागम में आकलन की विवेचना

रचनावादी उपागम में आकलन के निम्नांकित उद्देश्य होते हैं।

रचनावाद के प्रत्यय को समझना

I – आकलन पर रचनावाद सिद्धान्त का आरोपण

II – परम्परागत आकलन और आकलन के रचनावाद के मध्य अन्तर

III – खोजना

IV – आकलन को संगठन में भ्रान्तियों की व्याख्या करना।

रचनावाद और आकलन (Constructivism & Assessment)

रचनावाद से सम्बन्धित साहित्य में तीन कन्सट्रक्ट्स प्राप्त होते हैं तथा अधिगम पर्यावरण के लिए निहितार्थ ज्ञात होते हैं वे हैं –

1. आधिगम एक क्रियाशील प्रक्रिया
2. सीखने वाले (छात्र में कुछ पूर्व ज्ञान होता है
3. सीखने वाला अपने अधिगम का स्वयं उत्तरदायित्व लेता है

इन तीनों विचारों के द्वारा निम्न विश्वसनीयता के केन्द्र बिन्दु हैं। इन विचारों की क्रियात्मकता निम्न रचना द्वारा की जा सकती है।

1 – आकलन में पूछताछ शामिल होती है।
2 – आकलन में ज्ञान और समझ का आरोपण सम्मिलित है क्योंकि
3 – आकलन में तकनीकी के विस्तार का प्रयोग होता है।
4 – अधिगम की प्रक्रिया आकलन की भलाई में स्थापित नहीं होता
5. छात्र आरोपण के द्वारा ज्ञान का प्रदर्शन करते हैं
6. – आरोपण मूल्यांकन विश्लेषण और संश्लेषण आदि

विभिन्न प्रकार के टास्को का वर्णन करें ⟹

Discuss the different kinds of tasks:

असाइनमेन्ट (Assignment) ⟹

गृह असाइनमेन्ट (Home Assignment) — स्कूल असाइनमेन्ट School As

Home Assignment
गृह कार्य

इसके अन्दर छात्र शिक्षक के द्वारा दिये गये प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं। यहाँ शिक्षक छात्रों को विभिन्न स्त्रोतों के नाम तथा सन्दर्भ ग्रन्थों की जानकारी कराता है। छात्र उन सभी सन्दर्भ ग्रन्थ एवं पाठ्यवस्तुओं का अध्ययन करके दिये गये प्रश्नों के उत्तर ढूँढता है। उक्त प्रश्नों को भली-भाँति पूरा करके वह अपनी नोटबुक शिक्षक के पास जमा करा देता है। शिक्षक उत्तरों को जाँच करता है उनमें त्रुटियाँ खोजता है तथा आवश्यकता अनुभव करने पर छात्रों से अन्य पुस्तक पढ़ने की सलाह के साथ उसे वापस कर देता है।

स्कूल असाइनमेंट (School Assignment)

स्कूल असाइनमेन्ट के अन्तर्गत प्रयोगशाला में किये गये प्रयोगों सम्बन्धी निष्पादनों को सम्मिलित किया जाता है। शिक्षक प्रयोगों के आधार पर ही कुछ प्रश्नों के उत्तर पूछता है। ऐसी परिस्थिति में 4 घण्टे निर्धारित किये जाते हैं तथा 2 घण्टे छात्रों द्वारा स्वयं प्रयोगशाला में स्वतन्त्र रूप से कार्य के लिए रखे जाते हैं। इसमें शिक्षक एक प्रपत्र देता है छात्रों को देता है छात्र पढ़ कर उनके प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

एक उत्तम असाइनमेण्ट की कसौटियाँ
Criteria of a Good Assignment

1 — असाइनमेण्ट प्रकरण के सन्दर्भ में ही दिया जाना चाहिए।
2 — असाइनमेण्ट का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए।
3 — यह संक्षिप्त तथा बिन्दुबद्ध होना चाहिए जिससे कि छात्र इन्हें सरलता पूर्वक अध्ययन कर सकें।

Scanned with CamScanner